पातिशाही १० ।। कबियोबाच बेनती ।। चौपई ।।

हमरी करो हाथ दै रछ्छा ।। पूरन होइ चित की इछ्छा ।।
तव चरनन मन रहै हमारा ।। अपना जान करो प्रतिपारा ।।१।।
हमरे दुसट सभै तुम घावहु ।। आपु हाथ दै मोहि बचावहु ।।
सुखी बसै मोरो परवारा ।। सेवक सिख्ख सभै करतारा ।।२।।
मो रछ्छा निज कर दै करियै ।। सभ बैरन को आज संघरियै ।।
पूरन होइ हमारी आसा ।। तोर भजन की रहै पिआसा ।।३।।
तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ।। जो बर चहों सु तुम ते पाऊं ।।
सेवक सिख्ख हमारे तारीअहि ।। चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ।।४।।
आप हाथ दै मुझै उबरियै ।। मरन काल का त्रास निवरियै ।।
हूजो सदा हमारे पछ्छा ।। स्री असिधुज जू करियहु रछ्छा ।।५।।
राखि लेहु मुहि राखनहारे ।। साहिब संत सहाइ पियारे ।।
दीन बंधु दुसमन के हंता ।। तुमहो पुरी चतुर दस कंता ।।६।।
काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ।। काल पाइ सिवजू अवतरा ।।
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ।। सकल काल का कीआ तमासा ।।७।।
जवन काल जोगी सिव कीओ ।। बेदराज ब्रहमा जू थीओ ।।
जवन काल सभ लोक सवारा ।। नमसकार है ताहि हमारा ।।८।।
जवन काल सभ जगत बनायो ।। देव दैत जछ्छन उपजायो ।।
आदि अंत एकै अवतारा ।। सोई गुरू समझियहु हमारा ।।९।।
नमसकार तिस ही को हमारी ।। सकल प्रजा जिन आप सवारी ।।
सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ।। सत्त्रुन को पल मो बध कीओ ।।१०।।
घट घट के अंतर की जानत ।। भले बुरे की पीर पछानत ।।
चीटी ते कुंचर असथूला ।। सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ।।११।।
संतन दुख पाए ते दुखी ।। सुख पाए साधन के सुखी ।।
एक एक की पीर पछानैं ।। घट घट के पट पट की जानैं ।।१२।।
जब उदकरख करा करतारा ।। प्रजा धरत तब देह अपारा ।।
जब आकरख करत हो कबहूं ।। तुम मै मिलत देह धर सबहूं ।।१३।।
जेते बदन स्रिसटि सभ धारै ।। आपु आपनी बूझ उचारै ।।
तुम सभही ते रहत निरालम ।। जानत बेद भेद अर आलम ।।१४।।

निरंकार न्रिबिकार निरलंभ ।। आदि अनील अनादि असंभ ।।
ता का मूड्ह उचारत भेदा ।। जा कौ भेव न पावत बेदा ।।१५।।
ता कौ करि पाहन अनुमानत ।। महा मूड्ह कछु भेद न जानत ।।
महादेव कौ कहत सदा सिव ।। निरंकार का चीनत नहि भिव ।।१६।।
आपु आपनी बुधि है जेती ।। बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ।।
तुमरा लखा न जाइ पसारा ।। किह बिधि सजा प्रथम संसारा ।।१७।।
एकै रूप अनूप सरूपा ।। रंक भयो राव कही भूपा ।।
अंडज जेरज सेतज कीनी ।। उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ।।१८।।
कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ।। कहूं सिमटि भ्यो संकर इकैठा ।।
सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव ।। आदि जुगादि सरूप सुयंभव ।।१९।।
अब रछ्छा मेरी तुम करो ।। सिख्ख उबारि असिख्ख संघरो ।।
दुशट जिते उठवत उतपाता ।। सकल मलेछ करो रण घाता ।।२०।।
जे असिधुज तव सरनी परे ।। तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे ।।
पुरख जवन पग परे तिहारे ।। तिन के तुम संकट सभ टारे ।।२१।।
जो कलि को इक बार धिऐ है ।। ता के काल निकटि नहि ऐहै ।।
रछ्छा होइ ताहि सभ काला ।। दुसट अरिसट टरें ततकाला ।।२२।।
क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो ।। ता के ताप तनक मो हरिहो ।।
रिध्धि सिध्धि घर मो सभ होई ।। दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ।।२३।।
एन बार जिन तुमै संभारा ।। काल फास ते ताहि उबारा ।।
जिन नर नाम तिहारो कहा ।। दारिद दुसट दोख ते रहा ।।२४।।
खड़ग केत मै सरणि तिहारी ।। आप हाथ दै लेहु उबारी ।।
सरब ठौर मो होहु सहाई ।। दुसट दोख ते लेहु बचाई ।।२५।।

((((((((((()))))))))))